OM 7 INITIAL_Page 1 and 2 10-07-2014 21:36 Page 11

एकाग्रता से होता है क्षमता का निखार- साहा

भिलाई नगर। सफलता प्राप्ति के लिए लक्ष्य निर्धारित व मन को एकाग्र कर चलते रहना है। हर एक के अंदर क्षमता है, जिसे बाहर निकालने के लिए यह शिविर महत्वपूर्ण है। उक्त उद्गार एस.के. साहा,अधिशासी निदेशक, भिलाई इस्पात संयंत्र ने ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा कक्षा सातवीं एवं आठवीं के विद्यार्थियों के सम्पूर्ण व्यक्तित्व विकास के लिए आयोजित ग्यारह दिवसीय समर कैम्प उत्कर्ष-14 के उद्घाटन अवसर पर व्यक्त किये।

उन्होंने कहा कि कपड़े को तो साबुन से धोकर साफ किया जा सकता है लेकिन मन का कालापन खत्म करने के लिए सबका भला सोचें। मेडिटेशन तथा भगवान पर आस्था द्वारा मन का कालापन खत्म किया जा सकता है।

ब्र.कु. आशा,सेवाकेन्द्र संचालिका ने कहा कि बच्चों को देखकर सबका दिल खुश हो जाता है। दुनिया की सबसे बड़ी सम्पत्ति है खुशी। आप बच्चे सबको खुशी देनेवाले हो इसलिए असंभव हमारे शब्दकोश में न हो, जीवन में जहां दृढ़ता है वहां सफलता है ही। समर कैम्प के अंतर्गत ब्र.कु. प्राची ने 'मूल्यों से मूल्वान बनेंगे', प्रो. श्रद्धा स्वेन ने 'जीवन में लक्ष्य निर्धारण', ब्र.कु. तारिका ने 'श्रेष्ठ कर्मों द्वारा सफल जीवन' तथा 'मेडिटेशन के लिए आवश्यक बातें' आदि विषयों पर बच्चों को सरल और सहज भाषा में कहानियाँ, विडियो क्लिप व अभ्यास करवाकर समझाया।

डॉ. सुबोध साहा,बाल रोग विशेषज्ञ,जवाहर लाल नेहरु हॉस्पिटल एवं अनुसंधान केन्द्र ने बच्चों को हेल्थ टिप्स दिया, प्रसिद्ध कॉमर्स गुरु डॉ. संतोष राय ने पर्सनैलिटी डेवलॉपमेन्ट विषय पर बच्चों को बताया कि यदि आपकी सोच श्रेष्ठ है तो आप शहंशाह हो क्योंकि सोच के ऊपर ही जीवन का मूल्य है। सॉरी और धन्यवाद दो ऐसे जादुई शब्द हैं जो जीवन में हमें सदा आगे बढ़ाते हैं। ट्रैफिक ट्रेनर सी.दिनकर ने बच्चों को ट्रैफिक के नियमों के बारे में बताया तथा प्रसिद्ध कलाकार महेश चतुर्वेदी ने बच्चों को पेंटिंग के टिप्स दिये व प्रतियोगिता भी कराई। विभाष उपाध्याय तथा उनके साथियों द्वारा 'पपेट शो' के माध्यम से कई प्रकार के मूल्यों को जीवन में धारण करने की प्रेरणा दी गई।

समर कैम्प के समापन समारोह में ब्र.कु. हेमा,क्षेत्रीय समन्वयक,इंदौर ज़ोन ने अपने आशीर्वचन में कहा कि भगवान सत्य है और उसे सत्यता पसंद है। हम जितना सच्चे रहते हैं उतना ही सर्व के प्यारे बन जाते हैं। प्रसिद्ध उद्योगपति यू.एस. गुप्ता ने अपने शुभकामना संदेश में कहा कि यह समर कैम्प बच्चों को परिवर्तन करने का बहुत ही अच्छा तरीका है। इससे हम देश में अच्छे नागरिक दे सकते हैं। समर कैम्प के समापन अवसर पर बच्चों द्वारा सुंदर नृत्य व सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये तथा बच्चों व माता - पिता ने अपने बच्चों में इस समर कैम्प के दौरान आए परिवर्तन का अनुभव सुनाया। मुख्य अतिथियों द्वारा प्रतियोगिताओं में विजयी बच्चों को प्राइज़ व प्रमाण पत्र दिया गया। इस समर कैम्प में 300 से अधिक छात्र-छात्राओं ने लाभ लिया तथा इनमें से 80 छात्र-छात्राएँ प्रति रविवार राजयोग कक्षा में भी आकर लाभ ले रहे हैं।

भिलाई नगर। एस.के. साहा,अधिशासी निदेशक, भिलाई इस्पात संयंत्र, ब्र.कु. आशा, डॉ. सुबोध साहा,बाल रोग विशेषज्ञ, ब्र.कु. हेमा, यू.एस. गुप्ता, प्रसिद्ध उद्योगपति तथा विजेता बच्चे।

आकर्षण बनाम प्रेम

-ब्र.कु.अनुज, डिफेन्स कॉलोनी,दिल्ली

आकर्षण बनाम प्रेम का सिद्धांत

नियम वो होते हैं जो वैज्ञानिक रूप से सिद्ध हों, जैसे न्यूटन का गुरुत्वाकर्षण का सिद्धांत, गति का सिद्धांत। लेकिन उसमें एक सिद्धांत आकर्षण का सिद्धांत भी है जिसके प्रति लोगों का एक नज़रिया है कि हम जो कुछ भी सोचते हैं वो हो जाता है। परन्तु इसका कोई वैज्ञानिक सरोकार नहीं है। क्योंकि किसी भी विचार तथा उसकी फ्रीक्वेन्सी को हम माप नहीं सकते। अत: या तो एक अंधविश्वास हो सकता है या फिर मान्यता। कहा जाता है कि जिस चीज़ के बारे में आप सोचते हैं आप उसे आकर्षित करते हैं। लेकिन इसका प्रभाव यदि तुरंत होता तो हम समय नष्ट न करके उस चीज़ पर तुरंत ध्यान केंद्रित करते जिसे हमें प्राप्त करना है। जैसे मुझे बाइक चाहिए, कार चाहिए, मकान चाहिए! उसके हिसाब से फ्रीक्वेन्सी की सेटिंग करते और वस्तु प्राप्त हो जाती परंतु शुक्र है कि ये तुरंत काम नहीं करता। अगर काम नहीं करता तो क्यों? क्या हम कहीं कुछ गलत तरीके से तो नहीं कर रहे हैं? क्योंकि हम दिन-प्रतिदिन भिन्न-भिन्न चीज़ों से प्रभावित होते हैं अर्थात् आकर्षित हैं। तो क्या वो मिल जाती है? नहीं। इसका मूल कहां हैं, उसकी तह तक चलते हैं।

इच्छा बनाम भावना

इच्छा से भावना और भावना से आकर्षण अर्थात् प्राप्त करने की इच्छा उत्पन्न होती है। इच्छाओं का रूप अविस्तारित होता है, कोई सीमा नहीं है। इच्छाओं से उपजने वाली भावनायें निरंतर बदलती रहती हैं। जैसे फीलिंग के आधार पर चुना गया कार्य शायद आपको आगे बढ़ने ना दे। उदाहरण के लिए, जैसे पान की दुकान पर चार लड़के खड़े हैं उसमें से तीन हैं जो सिगरेट पीते हैं और एक नहीं पीता, लेकिन वे तीन उस एक का मज़ाक उड़ा रहे हैं कि ये तो अभी बच्चा है, इसको तो अभी दूध पीना चाहिए। तो उसको कैसी फीलिंग हो रही होगी! नि:संदेह गन्दी फीलिंग हो रही होगी। लेकिन जैसे ही वो पीना शुरु करता है,उसे फीलिंग अच्छी होनी शुरु हो जाती है। इससे एक बात समझ आती है कि जैसे फीलिंग खराब होती है, मन उसके विपरीत अच्छी फीलिंग ढूंढ़ता है। उदाहरण के लिए अगर पत्नी से लड़ाई हुई तो ऑफिस में जाकर कोई दूसरी फीमेल होगी जिससे वो बात करने लग जाए तो उसे अच्छी फीलिंग होने लगेगी या फिर वो अपनी फीलिंग बदलने के लिए खाना खाने लग जाएगा या फिर सिगरेट पीयेगा क्योंकि उसे फीलिंग अच्छी चाहिए। इससे पता चलता है कि फीलिंग्स अल्पकाल की होती हैं। इस बात को हमें अच्छी तरह मन के अंदर बार-बार धारण करनी है, तभी हम फीलिंग से लड़ सकते हैं। फीलिंग चाहे अच्छी है या बुरी है, ज़रूरी नहीं है कि जो फीलिंग अच्छी हो वो हमारे लिए अच्छा ही हो। अब सवाल उठता है कि कैसे निर्णय करें कि ये मेरे लिए अच्छा है या बुरा, या मेरे आसपास के लोगों के लिए अच्छा है या नहीं। फीलिंग अच्छी है तो करो, फीलिंग बुरी है तो भी करो, कहने का अर्थ है यदि फीलिंग बुरी है तो भी करो यदि वो अच्छा है हमारे या दूसरों के हित में।

चाहे फीलिंग अच्छी है या बुरी है लेकिन ये दुनिया के लिए अगर अच्छा है तो करो, चाहे दर्द हो चाहे मज़ा आये। अगर आप छोड़ते हैं तो यह आकर्षण है और अगर नहीं छोड़ते हैं तो ये प्यार है।

फीलिंग अट्रैक्शन बनाम लव

आज प्यार और आकर्षण में यही तो फर्क है। आकर्षण (Attraction gives you temporary pleasure but permanent pain) और प्रेम (Law of love gives you temporary pain but permanent pleasure or something beyond pleasure)। जैसे एक डांसर डांस करती है तो लोगों को बहुत अच्छा लगता है लेकिन वो यदि आकर्षित होकर डांस करती तो शायद उसे कोई पसंद नहीं करता परंतु वो डांस के प्रति समर्पित होकर उसे काम समझ कर नहीं बल्कि उससे प्रेम करती है इसलिए सिर्फ वो डांस करती है, तभी तो लोग उसे पसंद करते हैं। आप पूरे जीवन में लाखों लोगों से आकर्षित होते हैं लेकिन आप सबसे प्यार नहीं कर सकते। जिसके लिए आप सबकुछ करने के लिए तैयार हैं वो प्यार है। फीलिंग्स के आधार पर चुना गया कार्य आपको आगे बढ़ने नहीं देगा। एक मन कहेगा छोड़ दो यार, इसमें फीलिंग ठीक से नहीं आ रही है, इसलिए कार्य नहीं करो। दर्द हो रहा है ना। यदि आपको पता चल गया है कि जो कार्य आप कर रहे हैं वो सही है तो आप उसे करिये, वही आपको सुख देगा। कहने का मतलब है कि मैं ये कार्य इसलिए नहीं करता कि ये मुझे अच्छा लगता है या मुझे अच्छी फीलिंग आती है परंतु मैं इसलिए करता हूँ कि मैं इससे प्यार करता हूँ। अगर आप अपनी पत्नी को प्यार करते हैं तो कई बार आपको अच्छी फीलिंग होगी और कई बार खराब फीलिंग होगी तो इसका मतलब ये बिल्कुल नहीं है कि आप अपने भाव बदल दें। चाहे फीलिंग अच्छी है या बुरी है लेकिन ये दुनिया के लिए अगर अच्छा है तो करो, चाहे दर्द हो चाहे मज़ा आये। अगर आप छोड़ते हैं तो यह आकर्षण है और अगर नहीं छोड़ते हैं तो ये प्यार है। अगर आप फीलिंग के आधार पर चलते हैं तो आपकी लगाम एक मार्केट विज्ञापनकर्ता के हाथ में है। आज एक बाइक की एड दिखा दी तो आपकी फीलिंग बदल गई, कल उससे और अच्छी तो फीलिंग फिर बदली। आपकी फीलिंग या इमोशन, पांचों इंद्रियों के आधार पर होती हैं। आपके हाथ से आपका नियंत्रण गया। वो आपको जैसे चाहते हैं वैसा नचाते हैं। यही हो रहा है जो लोग आज दुनिया में असफल हैं वे अच्छे फीलिंग की तरफ भागते हैं और जब तक फीलिंग अच्छी है तब तक कार्य करते हैं, फीलिंग बुरी हुई छोड़ दिया। इसको हम कम्फर्ट ज़ोन (आराम पसंद स्थिति) कहते हैं। दुनिया में जो असफल हैं वे दिन में दस कमिटमेंट करते हैं और एक भी पूरा नहीं करते। इसका आधार ही है फीलिंग। अत: पहचानो अपने उस कार्य को जिसे आप प्यार करते हैं चाहे उसमें दर्द हो या सुख मिले, बस करते जायें, करते जायें, करते जायें। इस तरह चुनाव करें आकर्षण और प्रेम ...क्रमश:

भौतिकवादिता ..पेज 1 का शेष

विज्ञान लंगड़ा है और विज्ञान हीन आध्यात्मिकता अंधी है, दोनों का संतुलन मानव कल्याण के लिए अति आवश्यक है। महामण्डलेश्वर स्वामी आनंद चेतन जी महाराज, अध्यक्ष, आनंद कृष्णधाम कनखल ने अपनी शुभकामनाएं देते हुए कहा कि हम ऐसे कर्म करें जिनसे सर्व को सुख मिले परंतु हमें उन कर्मों में लिप्त नहीं होना है, बंधना नहीं है। कार्यक्रम की प्रशंसा करते हुए स्वामी जी ने कहा कि यह बहुत ही सराहनीय कार्य ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा किया जा रहा है। इस कार्यक्रम में निश्चित ही अनेकों आत्माओं का कल्याण होगा और यह कार्यक्रम और ही प्रगति की ओर जाना चाहिए।

डॉ. आदित्य नारायण पाण्डेय,प्रधानाचार्य,राजकीय आयुर्वेदिक कॉलेज,गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय हरिद्वार ने अपने वक्तव्य में कहा कि यह कार्यक्रम अत्यन्त लाभदायक है और उन्होंने मीना बहन से कहा कि इस प्रकार के कार्यक्रम का आयोजन गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय में भी ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा किया जाये।